



आधुनिकीकरण : परिवर्तन की एजंसियाँ, मास मीडिया, शिक्षा और संचार

डॉ. परेश आर. पटेल

अध्यापक,

आर्ट्स कोलेज, अंदोखा

१. प्रस्तावना

यही सही है कि हमारे देश में आधुनिकीकरण का प्रारम्भ ब्रिटिशराज के समय से है। जब हमें लगा कि ब्रिटिश सम्पर्क के कारण इस देश में परिवर्तन आ रहे हैं तब हमने व्यवस्थित रूप से हमारी परम्पराओं का अध्ययन किया। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही डी.पी.मुखर्जी ने कहा कि उपनिवेशवादी संस्कृति के संदर्भ में हमें अपनी परम्पराओं को अपने ऐतिहासिक संदर्भ में समझना होगा। यह देखना होगा कि हमारी परम्पराएं किस भांति विदेशी संस्कृति को अपनाती हैं। योगेन्द्रसिंह कहते हैं कि पिछले पचास वर्षों में भारतीय समाजशास्त्रियों ने इस बात का विश्लेषण किया कि बाह्य स्रोतों से निर्मित पाश्चात्य संस्कृति का स्वरूप हमारी परम्पराओं को क्या रूप देता है। इन दशकों में भारतीय संस्कृति का आनुभविक-एथनोग्राफिक (Empirical-ethnographic) अध्ययन समाजशास्त्रियों ने किया। इन अध्ययनों की एक धारा भारतीय समाजशास्त्रियों की है जिन्होंने विभिन्न परम्पराओं का अध्ययन करके उनके बीच में जो संयोजन (Linkage) है उसकी पहचान की जाये। दूसरी धारा अमेरिकी सामाजिक मानवशास्त्रियों की है जिन्होंने भारतीय संदर्भ में यहां के समुदायों का अध्ययन किया। इन्होंने बताया कि भारतीय सामाजिक परिवर्तन लोक समुदाय से चलकर कृषक समुदाय तक आता है और फिर आधुनिक समाज पर रुकता है।

हाल में सामाजिक अध्ययन की एक तीसरी धारा भी सामने आयी है। यह धारा पीपल ओफ़ इनडिया (POI) के प्रकाशन से आई है। के.एस.सिंह के नेतृत्व में भारत के 4000 से ऊपर समुदायों का अध्ययन हुआ है। इसके निष्कर्ष दूरगामी हैं। उदाहरण के लिये के.एस.सिंह बताते हैं कि भारत में अब क्षेत्रीय स्वायत्तता उभर कर आ रही है। प्रत्येक अंचल अपनी मांगों को लेकर दावे कर रहा है। अब ये अंचल अधिक सुदृढ़ हो रहे हैं। इस अनुसंधान की इन तीनों धारों को ध्यान में रखकर हम भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के कारण आनेवाले परिवर्तन का विस्तार से विश्लेषण करेंगे।

२. अर्वाचीन परिवर्तन (Contemporary Change)

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय समाज में बहुत बड़े परिवर्तन आये हैं और सन् 1991 के बाद वैश्वीकरण और उदारीकरण के कारण जो परिवर्तन आया है उसके बहुत बड़े परिणाम भारतीय समाज पर पड़े हैं। ढांचागत परिवर्तन को सरकार की अर्थनीति बनाने के कारण बाजार तथा विदेशी निवेश इस देश की जमीनी हकीकत (Grassroot Reality) बने गये हैं। इस नई आर्थिक नीति के कारण महंगाई तेजी से बढ़ गयी है, निर्यात वृद्धि की दर कम हुई है और आयात लगातार बढ़ रहा है। आज गरीबी रेखा के नीचे, आर्थिक सुधारों के आरम्भ होने के समय की अपेक्षा कई अधिक लोग रह रहे हैं। मतलब हुआ देश में गरीबी बढ़ी है। वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीतियों ने सामाजिक विकास के उद्देश्यों जैसे गरीबी हटाने, रोजगार में वृद्धि करने तथा सामाजिक सेवाएँ बढ़ाने पर उल्टा प्रभाव पड़ा है। एक प्रकार से देश में अभिजात्यकरण हो रहा है। पूंजीवाद की जड़ें मजबूत हो रही हैं। आधुनिकीकरण द्वारा पैदा किये गये इस सामाजिक परिवर्तन में मास मीडिया की भूमिका बहुत शक्तिशाली है, जिसे हम आधुनिक समाज कहते हैं। इका बहुत बड़ा लक्षण मास मीडिया और बाजार है। यह मीडिया के कारण ही है कि दूर-दराज का गांव सीधा न्यूयॉर्क और पेरिस से जुड़ा गया है। सामान्यतया मीडिया को प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अर्थ में लिया जाता है। यहां प्रिन्ट मीडिया में समाचार पत्र, पुस्तकें, पत्र-व्यवहार आदि सम्मिलित हैं।

वहां इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन, कम्प्यूटर, सेल्युलर फोन, रेडियो, फैंक्स आदी सम्मिलित हैं। मीडिया के इस माध्यमों ने दिरियों को समेट लिया है। आधुनिकीकरण के जिन परिवर्तनों की हम चर्चा करते हैं, उनमें शिक्षा और संचार भी महत्वपूर्ण साधन है। हमारे देश में इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी ने जो क्रान्ति उपस्थित की है, वह अनन्य है। इधर वाणिज्य में प्रबन्ध पाठ्यक्रम तथा विज्ञान में तकनीकी के पाठ्यक्रम इतने विकसित हुए हैं कि संसार भर में भारतीय विशेषज्ञों की धाक बैठ गयी है।

योगेन्द्र सिंह कहते हैं कि आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के अतिरिक्त आधुनिकीकरण ने सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत किये हैं। सम्पूर्ण देश में लोगों की जीवनपद्धति (Life Style) और अवकाश (Leisure) की गतिविधियां बदल गयी है। अब उपयोग की पद्धतियों कुछ दूसरी ही हो गयी है। किसी भी शहर के नुक्कड़ पर फास्ट फूड की दुकानें मिल जाती हैं, पोशाक का तौर-तरीका बदल गया है, सिन्थेटिक वस्तुएं अधिक काम में आने लगी हैं, आवागमन के साधन एक से बढ़कर एक नये हैं। अब मांस खाना, मुर्गाखाना और शराब पीना उपभोग के शौकिया साधन हो गये हैं। मजेदार बात है कि सामान्य लोग भी फल-फूल खाने लगे हैं, सब्जियां खाने का रिवाज बढ़ गया है और लोग दूध तथा दूध की वस्तुओं को अधिक काम में लेने लगे हैं। हरित क्रान्ति जो 1970 के दशक में हुई थी अब उसकी पूरक श्वेत क्रान्ति (White Revolution) आ गयी है। ये सब परिवर्तन भारतीय समाज में बहुत बड़े परिवर्तन हैं। इस हिन्दू प्रवासी समाज में, के.एस.सिंह बताते हैं, 90 प्रतिशत लोग मांसाहारी हैं और केवल 10 प्रतिशत शाकाहारी। नेशनल सेम्पल सर्वे भी ऐसे ही परिवर्तन को प्रमाणित करता है। सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन की दिशा एकदम क्रान्तिकारी है। अब जातियों, उपजातियों, अल्पसंख्यकों या आंचलिक समूहों में क्षेत्रीयता की भावना अधिक आने लगी है। इस बात के भी प्रमाण हैं कि प्रजातान्त्रिक और धर्म निरपेक्ष शक्तियों ताकतवर होने लगी है। हमने पंचायती राज में पिछड़े वर्गों को आरक्षण देकर प्रोत्साहित किया है। स्त्रियों का सबलीकरण किया है। एक क्षेत्र से लोग दूसरे क्षेत्र में यानी राजस्थान के मारवाडी दक्षिण भारत में और केरल के इसाइ सारे उत्तर-भारत में बिना हीचकिचाहट के आ-जा रहे हैं। यह एक शकीकरण की नयी शक्ति है। पीपल ओफ इन्डिया (POI) प्रोजेक्ट बताता है कि देश में कुल 91 सांस्कृतिक क्षेत्र हैं और लगभग प्रत्येक राज्य में एकाधिक क्षेत्र हैं। केवल गोआ ही ऐसा है जिसमें कोई उपक्षेत्र नहीं है। भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप जो विभिन्न और एकता आयी है वह स्पष्ट रूप से बताती है कि इस समाज में परम्पराओं का केन्द्रीय स्थान है। ये परम्पराएं ही हैं जो इतने परिवर्तनों के बाद भारतीय समाज की पहचान को बनाये हुए हैं। अब हम इस समाज की एथनिसिटी और सांस्कृतिक पहचान को आधुनिकीकरण द्वारा लाये गये परिवर्तन के संदर्भ में देखेंगे।

३. एथनिसिटी, सांस्कृतिक पहचान और परिवर्तन (Ethnicity, Cultural Identity and Change)

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप इस दे में व्यापार के क्षेत्र में बहुत बड़े परिवर्तन आये हैं। हुआ यह है कि बहुत बड़े परिवर्तन के होते हुए भी समाज के विभिन्न अंगों में संयोजन बना हुआ है। जाति, जनजाति, धार्मिक समूहों, सांस्कृतिक अंचल आदि पृथक् होते हुए भी आपस में जुड़े हुए हैं। यहां तक सब ठीक है। देश में एकीकरण आया है। लेकिन राजनीतिक कारकों ने एक नई मांग भी उत्पन्न कर दी है। अब लोग अपनी सांस्कृतिक पहचान (Cultural Autonomy) की बात करने लगे हैं। उदाहरण के लिये अब देश में आदिवासी यह कहने लगे हैं कि हमें पुनः अपने धर्म की ओर लौटना चाहिये। एक तरफ उन्हें हिन्दू बनाया जा रहा है, और दूसरी ओर ईसाई। धराराये हुए वे कहते हैं : अपने धर्म की ओर लौटो। के.एस.सिंह कहते हैं कि अब दलित लोग अपनी मांग को बुलन्द कर रहे हैं कि हम अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखेंगे। दलितों का इस तरह की मांग करना बताता है कि वे ब्राह्मणवाद से अपने आपको पृथक् करना चाहते हैं। उच्च हिन्दू जातियों से भी उनका मोह भंग हो गया है। के.एस.सिंह की इस बात का समर्थन गेल ओम्बेट (Gail

Omvedt) और एम.एस.गोरे भी कहते हैं। इस प्रक्रिया को मीडिया, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक भागीदारी ने और अधिक गति दी है। धर्म का जो राजनीतिकरण हुआ है इसने भी समस्याओं को बढ़ा दिया है।

४. आधुनिकीकरण और परिवर्तन की समस्याएँ (Modernization and Problems of Change)

आधुनिकीकरण ने भारतीय समाज में कई समस्याएँ पैदा कर दी हैं। हमारे यहां औद्योगिकीकरण से पहले व्यवस्था में जो साम्यानुकूलन था उसे आधुनिकीकरण ने बिगाड़ दिया है। उत्पादन की विधियाँ बदल गयी हैं, और इसके परिणामस्वरूप सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं में बदलाव आ गया है। देखा जाये तो पिछले 50-70 वर्षों में इस देश में दो क्रान्तियाँ आयी हैं। पहली क्रान्ति तो औद्योगिक क्रान्ति है और दूसरी प्रजातान्त्रिक। इन दोनों क्रान्तियों ने परम्परागत साम्यानुकूलन (Traditional Equilibrium) को उलट-पुलट दिया है। औद्योगिक क्रान्ति राष्ट्र निर्माण की बात करती है। इसका परिणाम यह होता है कि हम एक विश्व समुदाय या वैश्वीय सभ्यता के साथ जुड़ जाते हैं। जब ऐसा होने लगता है तब सबसे बड़ा खतरा स्थानीय और आंचलिक संस्कृतियों की पहचान का पैदा हो जाता है। जब हम राष्ट्र निर्माण के काम में जुट जाते हैं तो इससे आर्थिक और औद्योगिक विकास होता है। यह विकास गैर-बरबादी को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिये हरित और श्वेत क्रान्ति ने गांव में गैर-बरबादी को बढ़ा दिया है। इस तरह औद्योगिक विकास ने पर्यावरण को नष्ट कर दिया है। गंदी बस्तियाँ आ गयीं हैं।

रुचिकर बात यह है कि इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप देश के विभिन्न अंचलों में सांस्कृतिक पहचान का मुद्दा उभरकर सामने आ गया। अब आदिवासी जातियाँ और धार्मिक समूह अपनी पहचान पर जोर देने लगे हैं। आये दिन नये देवी-देवताओं का आविर्भाव हो रहा है। नित नई शोभा यात्राएँ निकल रही हैं। कहीं भी ऐसा नहीं लग रहा है कि उद्योग और उत्तर-उद्योग के विकास के स्तर पर पहुँच कर हम मानवीय समस्याओं के साथ रु-ब-रु हो रहे हों। परणाम यह हो रहा है कि हमारा संयुक्त परिवार की परम्परा टूट रही है। गांवों की एकता समाप्त हो रही है और शहरों का पर्यावरण जान लेवा हो गया है। आधुनिकीकरण की इस प्रक्रिया में हमारे परम्परागत मूल्य खतरे में आ गये हैं। यदि यही चलता रहत तब हम विध्वंस के कगार पर खड़े हो जायेंगे। योगेन्द्र सिंह कहते हैं : आधुनिकीकरण का हमारे मूल्यों, सांस्कृतिक व्यवहारों परिस्थिति की और मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता पर ऐसा प्रभाव पडा है के इसका परिणाम हमारे लिये विध्वंसकारी होगा। हमारा सांस्कृतिक संघर्ष बहुत गहरा है। आधुनिकीकरण ने हमारी परम्पराओं और नये मूल्यों में एक अद्भुत भेंद करवा दी है। इसके कारण हमारे परम्परागत मूल्यलं का क्षय हुआ है, जन संस्कृति की संरचना कमजोर हो गयी है और इससे हमारे मुख्यधारा की सांस्कृतिक परम्परा ढीली पड गयी है और इस सबका सम्बन्ध एक नये बाजार की संस्कृति के साथ जुड़ गया है। हमारा विचार है कि यदी आधुनिकीकरण के इस दौर में हमारे परम्परागत परिवार व्यवस्था टूट गयी और गांव तथा मोहल्ले के सम्बन्ध कमजोर हो गये तब अन्य विकसित समाजों की तरह हमारे समाज की सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था में संकट आ जायेगा।

संदर्भसूचि

1. Desai, A.R. (1966). Social Background of India Nationalism, Popular Prakashan, Bombay.
2. Dube, S.C. (1993). Understanding Change, Vikas Publishing House, New Delhi.
3. Gupta, (2000). Dipankar Mistaken Modernity, Harper Collins, New Delhi.
4. Singh, K.S.(1992). People of India: An introduction, Anthropological Survey of India, Calcutta.
5. Singh, Yogendra (1994). Modernization of Indian Tradition, Rawat, Jaipur, (reprinted)
6. Smith, D.E. (1963). India as a Secular State, Princeton University Press, New Jersey.